भाग २
भारतीय सेना
INDIAN ARMY
INDIAN NAVY
₹ ५०
हल्दी घाटी का रण संग्राम
₹ ५०
© विंग कमांडर शशिकांत ओक
मो. ९८८१९०१०४९ संस्करणः ९- २०२१
कृपया ध्यान दें: ब्रिटिश उच्चारण के प्रभाव को कम करने के लिए भारतीय शैली के अनुसार नाम लिखे गए हैं।

वर्तमान सेना, वायु सेना और नौसेना के युद्ध

विशेषज्ञों की प्रस्तुति

जोश से कहो

रेजीमेंट	War Cry	रण गर्जना
भारतीय वायु सेना	Bharat Mata Ki Jai	भारत माता की - जय
राजपुताना रायफल्स	Bolo Raja Rसुबह Chandra Ki Jai	बोलो राजा रामचंद्र की - जय
राजपूत रेजिमेंट	Bol Bajrang Bali Ki Jai	बोल बजरंग बली की - जय
राजपुतों की पारंपरिक सेना	Ek Ling ji	बोलो एक लिंगजी की - जय
मराठा लाईट इन्फँट्री	Bolo Raja Rसुबह Chandra Ki Jai	बोला श्री शिवाजी महाराज - की जय

मेवाड़ राज्य कहां है? हल्दी घाटी आजकल कैसे दिखाई देती है?

Warni Ki Bhagal

Actual narrow Pass of Haldi

Chetak Smarak
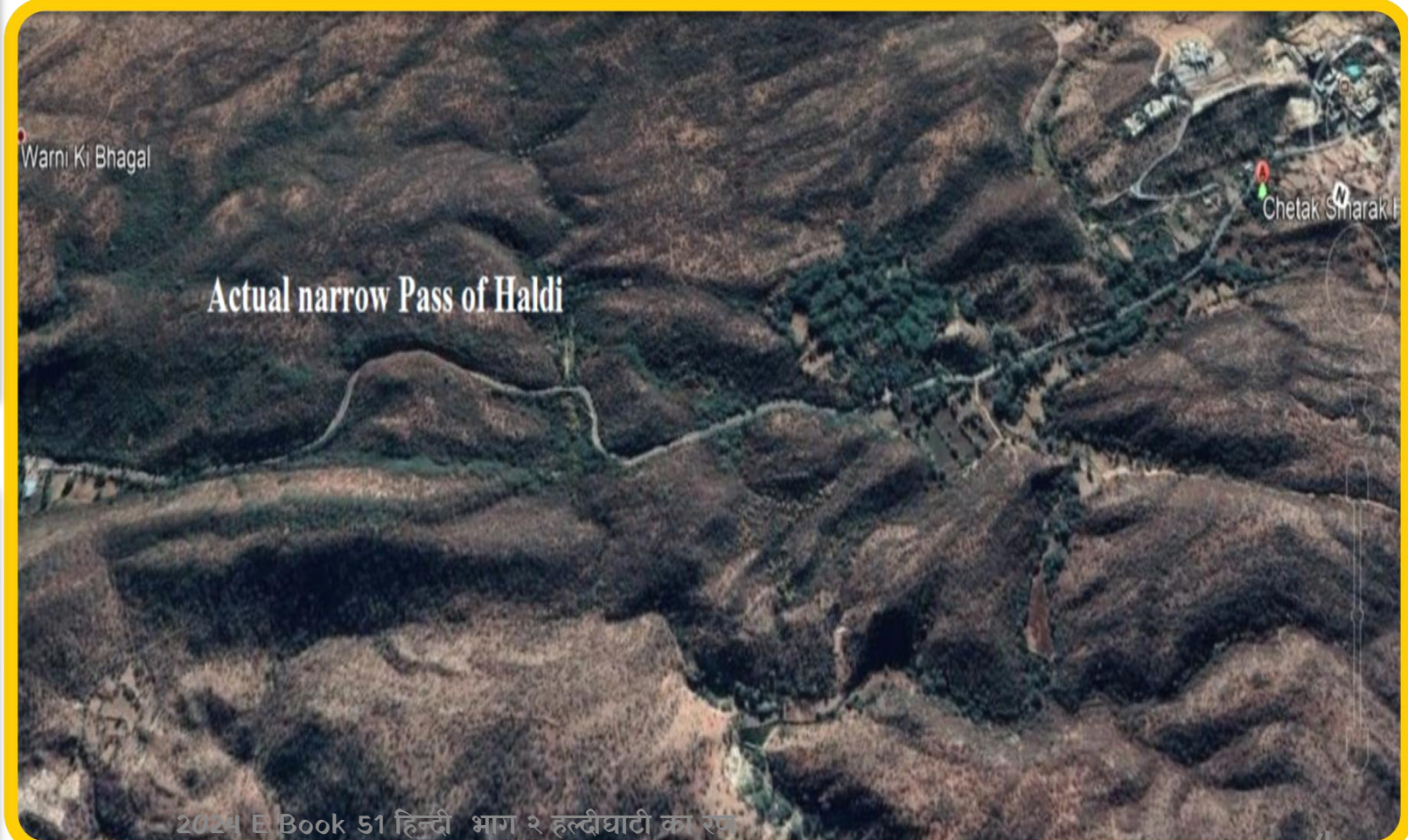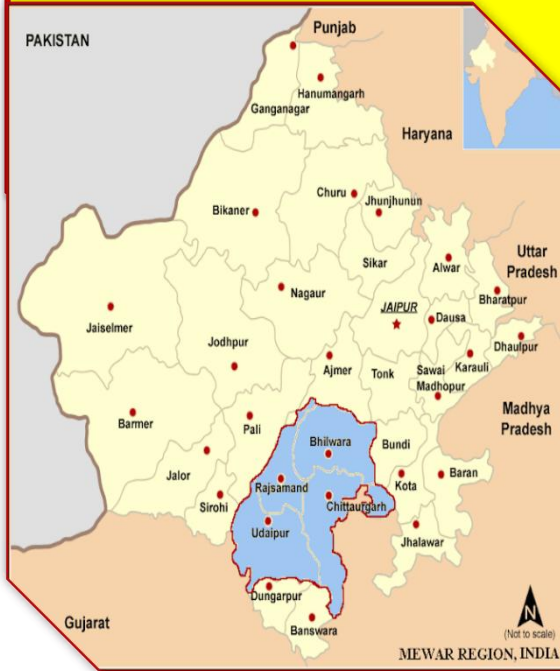
क्या यह दावा है कि 'युद्ध उस समय हुआ था, जैसा कि यहां प्रस्तुत किया गया है?

- यह लड़ाई रचनात्मक स्वतंत्रता पर आधारित है।
- इस बात का कोई दावा नहीं है कि लड़ाई वास्तव में इसी तरह हुई थी। वर्तमान में कई मान्यता प्राप्त और व्यापक स्थलों के ऐतिहासिक विवरण, तथ्य और साक्ष के टुकड़े इतिहास में उपलब्ध नहीं हैं।
- इसलिए, वर्तमान में मान्यता प्राप्त जानकारी के आधार पर घटनाओं की स्थापना की गई है।
- ऐसे में यह काल्पनिक परिदृश्य जीवन की घटनाओं के अतीत और भविष्य के व्यवहार, साहस, वीरता का प्रदर्शन, सैन्य प्रबंधन कौशल और उपलब्ध संसाधनों और हथियारों के उपयोग को ध्यान में रखते हुए तैयार किया गया है।

हल्दीघाटी अभियान से पहले राजनीतिक स्थिति क्या थी? - १

- इस सवाल के जवाब में सेना के अधिकारी कहते हैं-
- १. हम इतिहासकार नहीं हैं। लेकिन सामान्य जानकारी से यह कहा जा सकता है कि...
- २. राजा अकबर (उम्र ३२) मेवाड़ साम्राज्य को मुगल शासन के अधीन लाना चाहता था। शांति वार्ता के पिछले चार प्रयास विफल रहे थे।
- ३. वर्ष १५७६ में, आमेर (जयपुर) राज्य (आयु २७) के राजकुमार - कुंवर मानसिंह ने अभियान का नेतृत्व किया।
- ४. योजना के अनुसार, महाराणा प्रताप (३७) को पकड़ लिया जाना था या उनकी हत्या कर देनी थी तथा उनके गोगुन्दा और कुम्भलगढ़ किले को अपने कब्जे में ले कर देना था । राजा अकबर राजपूतों के प्रभुत्व को समाप्त करना चाहता थे। मुगल सत्ता के व्यापार मार्ग पर कर राजस्व अर्जित करना चाहते थे।

हल्दीघाटी अभियान से पहले राजनीतिक स्थिति क्या थी? - २

- ५. राणा प्रताप युद्ध में घायल हो गए, लेकिन पकड़े नहीं जा सके। इस प्रकार, अकबर की ओर से अभियान विफल हो गया। इस कारण कुँ. मानसिंह को अगले २ साल तक दरबार में आने नहीं दिया गया!
- ६. हाथियों का इस्तेमाल युद्धक टैंक के रूप में किया जाता था। चेतक घोड़े को एक हाथी ने घायल कर दिया । महाराणा प्रताप को हल्दी घाटी के पहाड़ी दर्रे में तितर-बितर होना पड़ा।
- ७. बाद में १५९७ में महाराणा प्रताप की मृत्यु के बाद, साल १६१५ में मेवाड़ साम्राज्य और मुगलों के बीच एक शांति संधि पर हस्ताक्षर किए गए। मेवाड़ राजवंश की महिलाओं का धर्म परिवर्तन नहीं किया जाएगा। ५ हजार सिपाहियों के मनसब का सम्मान मिलेगा लेकिन मेवाड़ के शासक राजदरबार में उपस्थित नहीं रहेंगे, आदि समझौते के कुछ कलम थे।

डिसक्लेमर /अस्वीकरण

- इस प्रस्तुति में उपयोग किए जाने वाले फोटो, हस्तशिल्प, विभिन्न ध्वनियों, वीडियो क्लिप, व्यक्तित्व और चेहरे के भाव प्रतिनिधि के रूप में उपयोग किए जाते हैं।
- उनका दुरुपयोग करने का हमारा हेतु नहीं है।
- तथापि, यदि किसी कारण से कॉपीराइट का उल्लंघन हुआ है, तो उन सामग्रियों को छोड़ दिया जाएगा।

युद्ध की तरह फुटबॉल खेल में दुश्मन को धोखा देने की तकनीक का इस्तेमाल किया जाता है।

1. Goalkeeper
2. Right back
3. Left back
4. Right half
5. Left half
6. Center half
7. Inner right
8. Inner left
9. Right wing
10. Center forward
11. Left wing
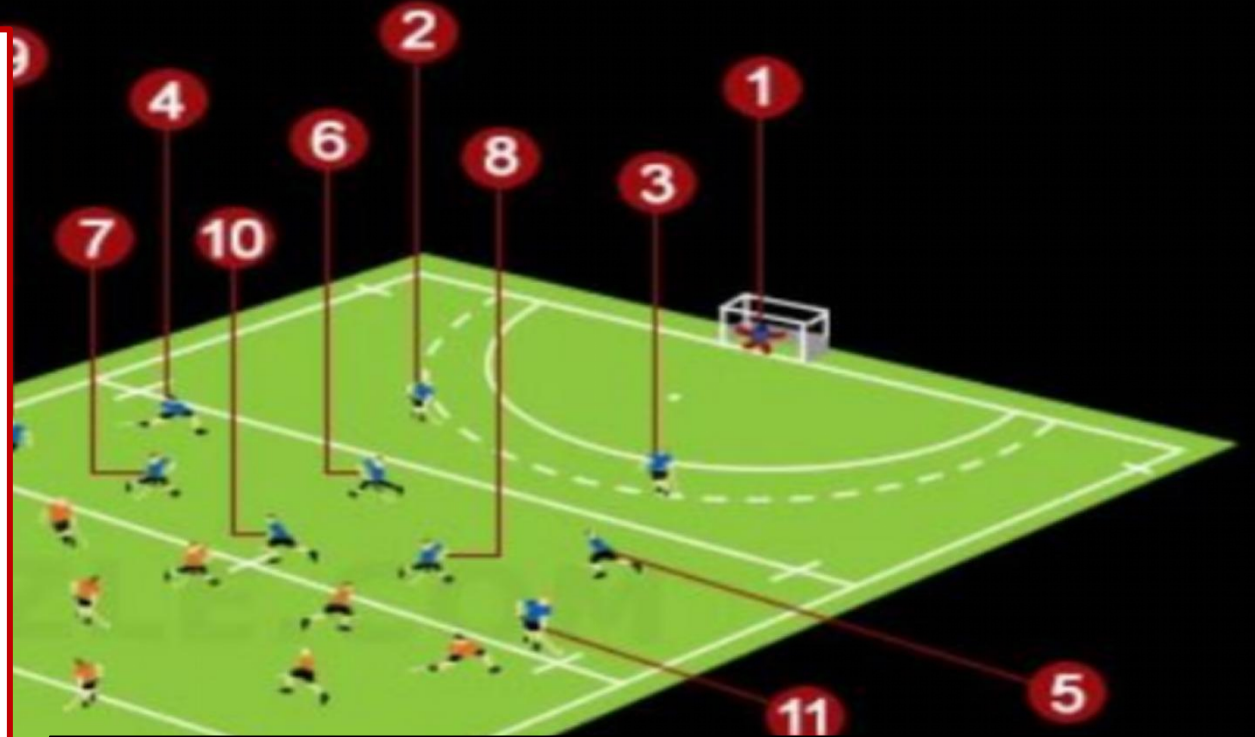
हॉकी – फुटबॉल जैसे खेल और युद्ध में क्या समानताएँ है?

- युद्ध और फुटबॉल या हॉकी जैसे खेल किसी भी तरह से एक जैसे नहीं हैं, लेकिन दोनों में बहुत समानता हैं।
- फुटबॉल/हॉकी कमोबेश एक युद्ध ही है,
- एक युद्ध जो मैदान पर खेला जाता है लेकिन दुश्मन को मारने के लिए नहीं।
- दोनो समान उद्देश्यों को साझा करते हैं; दुश्मन को हर कीमत पर हराना।
- दोनों की रणनीतियों की अपनी समानताएं हैं।
- दुश्मन को धोखा देना फुटबॉल हो या हॉकी या युद्ध तींनों का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है।
- Ref: Ben Purtell's Blog

युद्ध में अपने सैनिकों को उतारने का मुगल सेना का तरीका

युद्ध के लिए अश्व सेना का प्रयोग किया जाता था। प्रत्येक ट्रकड़ी में कई मनसबदार होते थे और उनमें से वरिष्ठ को प्रमुख के रूप में नियुक्त किया जाता था...

- (१) कोल - सेना में मुख्य इकाई। कमांडर टुकड़ी में था।
- (२) बरनघर, दस्तरस्त और मैमना - इन तीन शब्दों का अर्थ है दाहिनी ओर, दाहिना हाथ। उनमें से प्रत्येक को एक नाम देना।
- (३) तीन शब्द जारंघर, दस्त-ए चाप और मैसूर- का अर्थ है बाईं ओर, बायां हाथ। कोल के बाईं ओर एक से तीन टुकड़े पंक्तिबद्ध थे। उनमें से प्रत्येक को एक नाम था।
- (४) अल्तमश (या इल्तमिश) - कोल के सामने खड़ी एक लिंक टुकड़ी।
- (५) हरावल - इल्तमश के बगल में टुकड़ी।
- (६) हरावल-ए-जरंघर-जरंगघर के सामने टुकड़ी
- (७) हरावल-ए बरांघर - बरांघर के सामने टुकड़ी।

प्रारंभ में, लड़ाकू दस्तों को शत्रू के अग्रिम पंक्ति का परीक्षण करने के लिए भेजा जाता था...

हरावल - इल्तमश के लिंक टुकडी के आगे तीन बड़े दस्तों की एक सेना

बायी हरावल

अ(इ)ल्तमश

अ(इ)ल्तमश

दाहिनी हरावल

❖अल्तमश (या इल्तमिश) - कोल के सामने खड़ी एक टुकड़ी।

जरांघार (बायी बाजू)

कोल (मध्य)

बरांघर (दाहिनी बाजू)

चंदावूल- पिछाडी का राखीव दल

सेनापती

चंदावूल - छावणी हाथी,उँट,बैल,यातायात के जनावर

१८ जून
१५७६
सुबह
६ बजे

मुगल सेना की तैनाती

बनास नदी के पार मोलेला पहाड़ी से रणभूमि में सेना का गठन होता रहा...
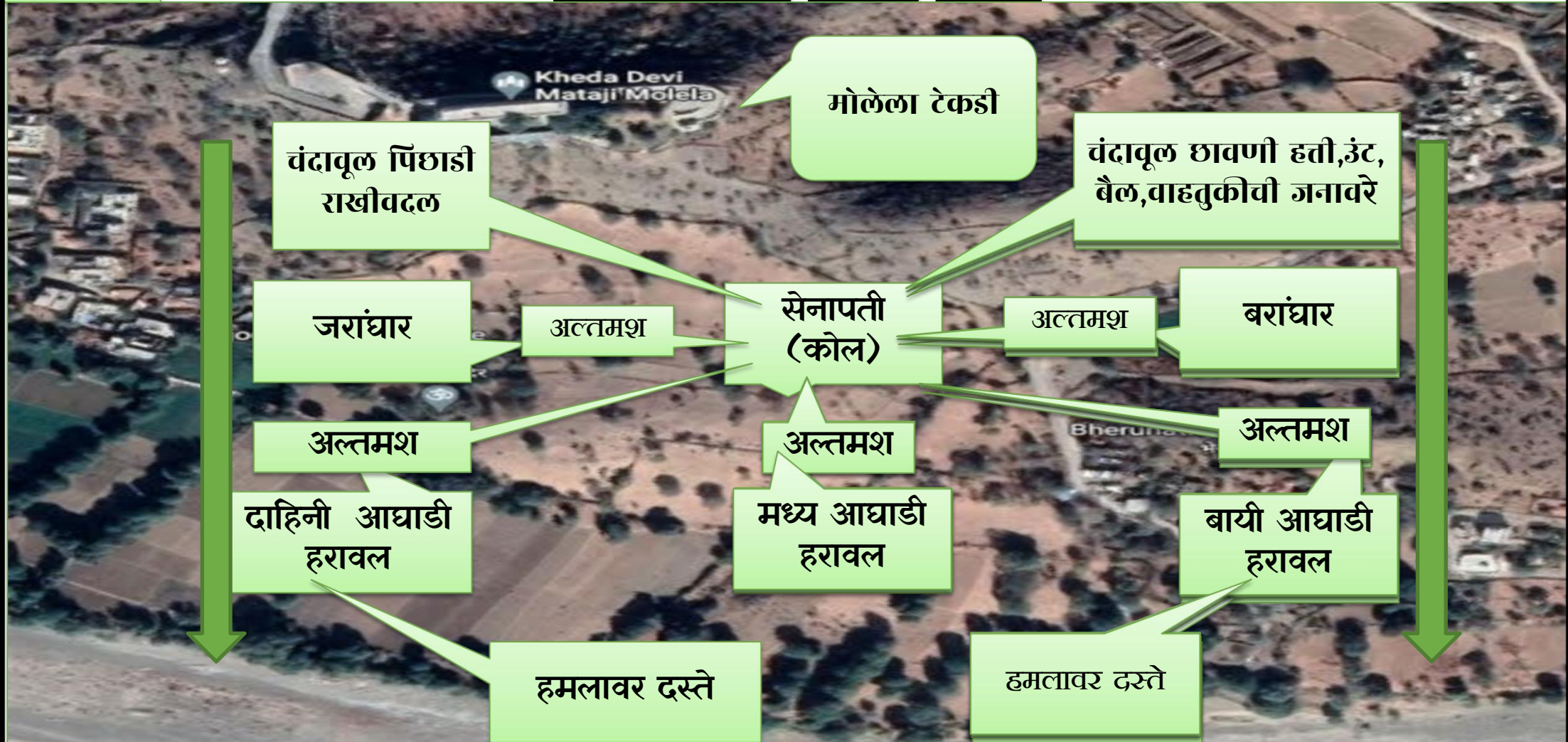
दृष्य १
०६.३० सुबह

मेवाड़ सैन्य शक्ति की तैनाती

18 जून 1576 की ग्रह स्थिति

❖ **कुंडली ने सर्वार्थ सिद्धि योग, सबसे महत्वपूर्ण योगों में से एक, शुभ ग्रह रचना दोनों दिवस का संकेत दिया था।**

27, Jyeshtha
Shukla Paksha, Dwadashi
1633 Tarana, Vikrama Samvata
Nathdwara, India

18
June 1576
Friday

Nirjala Ekadashi Parana, Pradosh Vrat, Vinchudo, Sarvartha Siddhi Yoga

❖ **३ अप्रैल १५७६ के दिन सर्वार्थ सिद्धि योग तिथि के दिन कुँ. मानसिंह ने आमेर दुर्ग से अपने अभियान की शुरुआत की।**

10, Vaishakha
Krishna Paksha, Dashami
1633 Tarana, Vikrama Samvata
Jaipur, India

03
April 1576
Saturday

Sarvartha Siddhi Yoga, Bhadra

दिल्ली और जयपुर में जंतर मंतर खगोलीय वेधशाला का वास्तु (आमेर) जयपुर महाराज के परिवार की ओर से एक उपहार है।

दृष्य १.१ ८.०० सुबह

मुगल सेना के हाशिम बरहा सरदार की झडपों के लिए विशेष प्रशिक्षित कंपनी मेवाड़ सेना की परीक्षा के लिए आगे बढ़ी।

दृष्य १.२ ८.०० सुबह

मेवाड़ सेना – भील राणा पुंजा के धनुर्धारियों ने पहाड़ी के दोनों ओर से बाणों की वर्षा की। तब तक हकीम सूर की तोपखाने की गोलाबारी में हमलावरों ने कई जानें गंवाईं और नदी के किनारे पीछे भाग गए।
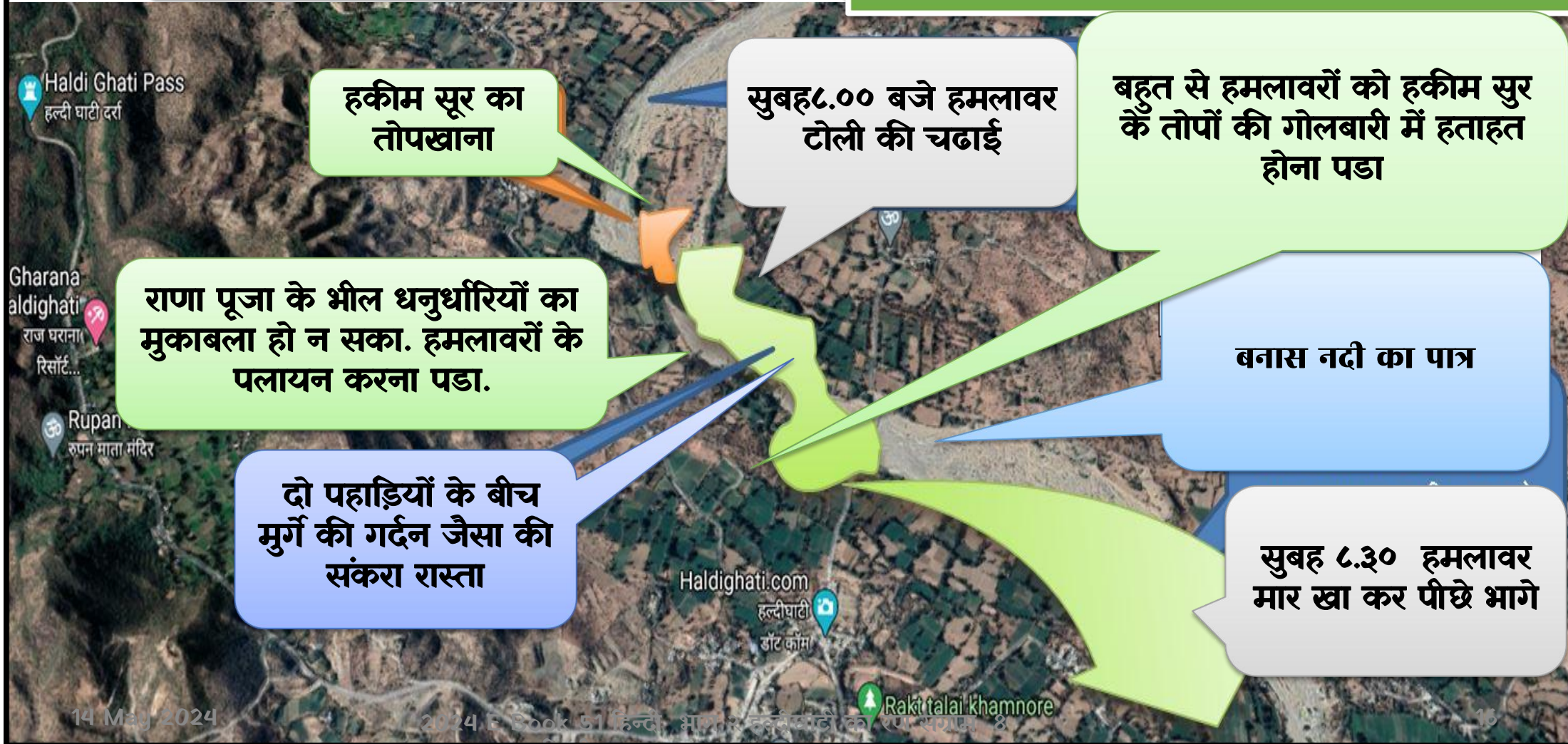
दृष्य १.३
८.३० सुबह

दो पहाड़ियों के बीच हुई गोलीबारी में मुगल सेना फंस गई

दृष्य १.२
९.३०
सुबह
हकीम सूर का तोपखाना
मुगल तीरंदाज़ दोनों ओर की पहाड़ियों की चोटी पर चढ़ गए और वहां के बीड़ा के टुकड़ियों को मार डाला। कुछ भील दहशत में भाग गए...
संकरा दर्रा
Malinda Temp
Raj Gharana
esort Haldighati
राज घराना
रिसॉर्ट...
Rupan Mata Mandir
रुपन माता मंदिर
Haldighati.com
हल्दीघाटी
Rakt talai khamnore
Khamnore
खाम्नोर
करधर बावजी खेडी
पीपलाजसिल्वर...
Kheda Devi
Mataji Molela
खेड़ा देवी
Google
असद खान और राणा लूना करण के सैनिक भागते लोगों की जगह भरने के लिए गए।उन्हें भी पीछे धकेल दिया गया। हालाँकि, कुछ तीरंदाज पीछे से दोनों ओर की पहाड़ियों की चोटी पर चढ़ने में सक्षम थे और भीलों को डराते थे।इसने हाकिम सूर से मध्यम आकार की तोपों को नियंत्रित करने के लिए संकरे दर्रे को पार करने का अवसर दिया। इस प्रकार, उसे तोडकर दिया गया और शायद उसे मार दिया गया।

दृष्य १. ४.२ ९. ३० सुबह

मुगलों ने हकीम सूर से मध्यम आकार की तोपों पर अधिकार कर लिया। मुगल तीरंदाज पीछे से दोनों ओर की पहाड़ी की चोटी पर चढ़ गए और भीलों को डराकर भगा दिया

दृष्य २.१
९.३० सुबह

मुगलों के हंगामे को देखकर, महाराणा प्रताप राम प्रसाद हाथीपर सवार हो कर के मेवाड़ हाथीयों की सेना का नेतृत्व कर निकल पडे। मुगल सेना के बाएं हरावल पर ऐसे टूट पडे की हरावल दस्ता पीछे मुडकर भागता रहा।

दृष्य २.२
१०.००
सुबह

अकबर के दरबार के मुल्ला बदायूंनी, मुगल हरवल (फॉरवर्ड) के हाशिम बरहा के काज़ी खान के साथ, विशेष अनुमति लेकर युद्ध में आए थे। क्योंकि वह युद्ध की कार्रवाई देखना चाहते थे। उन दोनों को किसी तरह अपना बचाव करना पड़ा।

दृष्य ३.१ १०.३० सुबह

महाराणा प्रताप की युद्धनिति थी की मुगलों के तोपखाने को उद्धस्त करना। ताकि गोगुंदा किला तोपगोलों से ध्वस्त ना हो। हो सके तो उसे हथिया कर हकीम सूर के तोपखाने में शामिल कराना।

दृष्य ४.१
१०.३०
सुबह

दोनों सेनापति इतने करीब आ गए कि एक-दूसरे पर भाले फेंककर जानलेवा हमला किया जा सकता था।

दृष्य ४.२
११.००
सुबह

महाराणा प्रताप जीत हासिल करना चाहते थे

- उन्होंने सभी वरिष्ठ सरदारों और उनकी सेनाओं को लहराया कि वे अंतिम आक्रमण करें।
- सभी पीछे हटने वाले मुगलों पर हमला करने के लिए सहमत हुए।
- सभी पर बार-बार युद्ध के नारे लगाने का काम लगाया गया।
- "बोलो एक लिंग जी की - जय..."
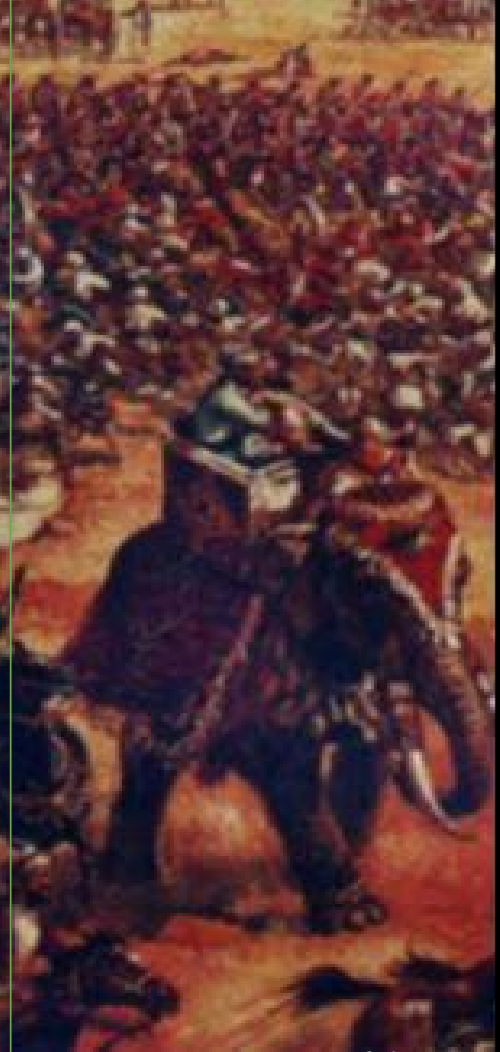
दृष्य ४.२
११.०० सुबह

युद्ध को पूरी तरह से समाप्त करने के लिए, महाराणा ने युद्ध के मध्य मैदान पर कब्जा करने का आदेश दिया

प्रतीकात्मक प्रस्तुति
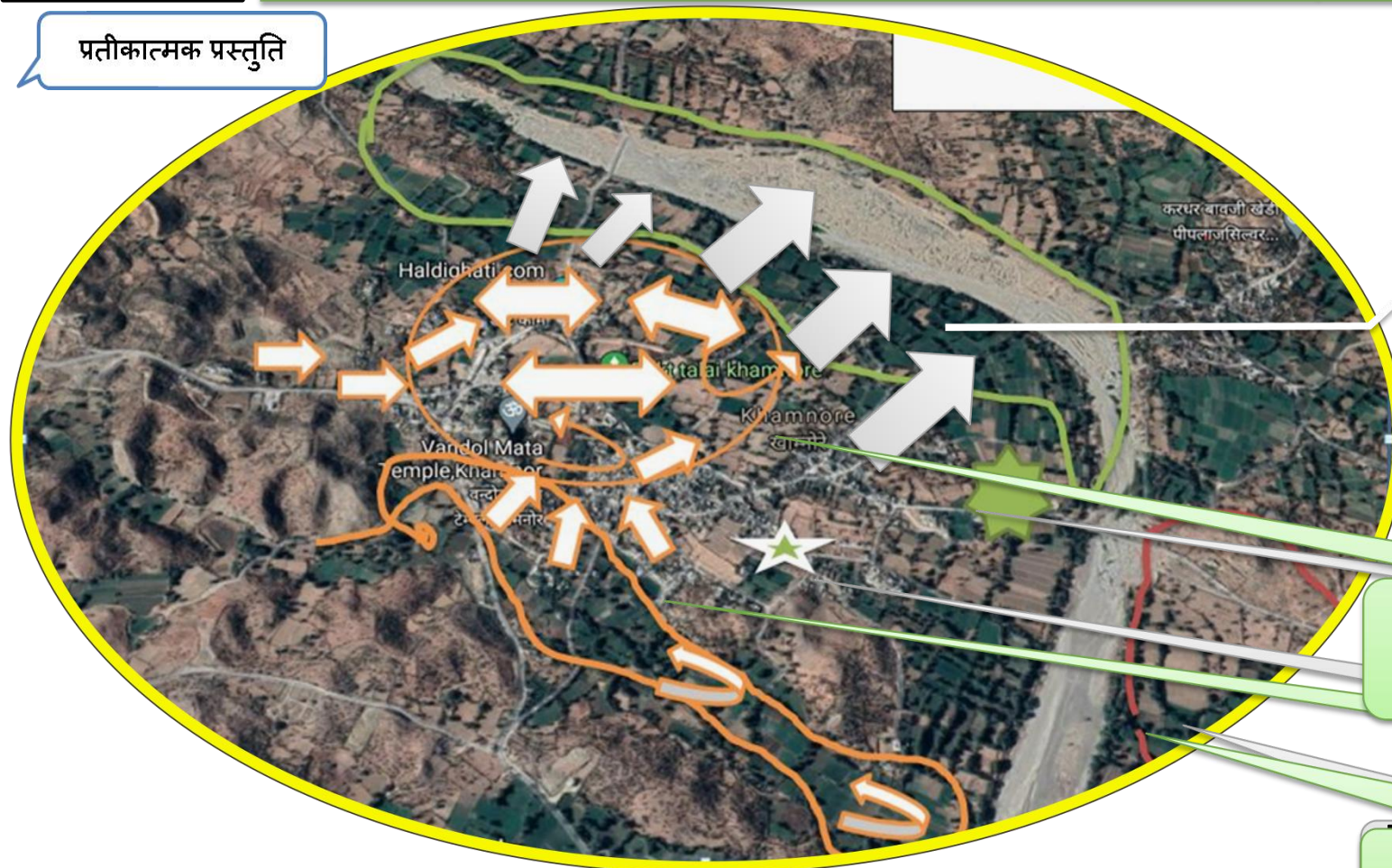
- ❖ चरण जयसिंह
- ❖ चरण कैसा सिंह
- ❖ डोडिया भीम सिंह
- ❖ हकीम खान सूरी
- ❖ भामा शाह
- ❖ ताराचंद
- ❖ *राव पूंजा भील
- ❖ और बहुत सारे
- ❖ युद्ध हाथी बल

कुँ. मानसिंह ने भाई माधोसिंह को पुकारा

माधो सिंह ने घुडसवारों को इशारा दिया

उज़्बेक मिहतर खान आदेशों की प्रतीक्षा कर रहे थे

दृष्य ५.१
११.००
सुबह

कुँ. मानसिंह ने आरक्षित घुड़सवार दल को बुलाया

दृष्य ५.२ ११.१५ सुबह

कुँ. माधोसिंह ने घुड़स्वार के प्रमुख, उज़्बेक कमांडर मिंहतर खान को झंडे लहराकर मैदान में आने का इशारा किया।

दृष्य ५.४
११.००
सुबह

महाराणा हाथी से उतरकर लाडले चेतक घोडे पर सवार हुए

दृष्य ६.१
११.००
सुबह

मेवाड़ बलों के लिए घातक स्थिति

दृष्य ६. २ १२. ०० दोपहर

यह देखकर कि स्थिति हाथ से निकल रही थी, महाराणा प्रताप ने अपने हाथियों को युद्ध के मैदान के केंद्र में ले जाने का आदेश दिया। इसके जवाब में कुँ. मानसिंह ने युद्ध में अपनी हाथी सेना को झोंक दिया

दृष्य ७.
१२.३०
दोपहर

रण शिक्षित
हाथीयों का युद्ध

- हाथियों की लड़ाई बेहद भीषण होने वाली थी। हाथियों को विशेष रूप से सजाया गया था। उन्हें सूंड से बंधी तलवारों से दुश्मन सैनिकों को चलाने और मारने के लिए प्रशिक्षित किया गया था।
- उभरे हुए दांतों पर नुकीले खंजर लगे हुए थे। ऐसे दहाड़ते हाथी को सामने देखकर सैनिकों के पास भागने और खुद को बचाने के अलावा कोई चारा नहीं था।
- कुशल महावतों ने उन्हें अंकुश की नोंक से विभिन्न आदेशों का पालन करने के लिए शिक्षित किया था। कुशल योद्धा, जो शीर्ष हौदे पर सवार थे, उनके पास विभिन्न लंबाई के भाले और तीरों का भंडार था।

महावत तथा सहाय्यक कर्मचारी

- हाथी के हिलने-डुलने के कारण अस्थिर स्थान से दुश्मन पर फेंके गए हथियार से कोई घायल नहीं होने की संभावना थी।
- इस पर काबू पाने के लिए तत्परता से हथियार पहुंचाने के लिए सहायक कर्मचारी पीछे पीछे दौड़ते रहे।
- हौदे में बैठे प्रमुख सरदार के पीछे पूंछ पर बांधी पट्टियों को पकड़े हुए एक सैनिक, आवश्यकतानुसार वह उन्हें अलग-अलग लंबाई के भाले, तीर और अतिरिक्त धनुष से लैस कर रहा था।
- हौदे में बैठे प्रमुख सरदार तथा माहूत ने चमड़े का एक मोटा सुरक्षा कवच पहना हुआ था ताकि घायल न हों।

दृष्य ७.१ - १३.०० दोपहर

मेवाड़ की ओर का युद्ध हाथी लूण घायल हो गया...

दृष्य ७. २
१३.००
दो पहर

फिर गजमुक्त और राम प्रसाद हाथी आए। वह कुशल महावतों की कड़ी परीक्षा थी

दोनों ने ए एक दूसरे को धक्का देने लगे।
एक दूसरे की सूंड पकड़ ली और दूसरे को नीचे गिराने की पूरी कोशिश करते हुए

दृष्य ७.३ - १३.०० दोपहर के बाद

दोनों हाथी युद्ध करने में निपुण थे

वह कुशल महावतों की कड़ी परीक्षा थी

दृष्य ७.४ – १३.००
दोपहर के बाद

छह हाथियों को तैनात किया

दृष्य ७.५
१४.०० दोपर के बाद

जब राम प्रसाद का महावत गिर गया, तो युद्ध ने एक खतरनाक मोड़ ले लिया।

- यह देख मुग़ल सेना का महावत साहस के साथ उछल पड़ा और उसे राम प्रसाद परसवारी करने का अवसर मिला।
- उसने कुशलता से हाथी को पकड़ लिया।
- राम प्रसाद को खोपड़ी के सबसे संवेदनशील हिस्से पर तेज अंकुश से तो कभी पुचकार कर अपने काबू में किया।

मूगल महत ने शिताफी से रामप्रसाद पर कूद कर कब्जा कर लिया

महान हाथी राम प्रसाद मुगलों के साथ हो गया...!

- जल्द ही, राम प्रसाद ने महाराणा के हाथियों के खिलाफ मेवाड़ सेना के दस्ते पर जाकर तबाही मचा दी।
- परिणामस्वरूप, मेवाड़ के सैनिक सभी दिशाओं में भागने लगे।
- तब तक मुग़लों के बचे हुए हाथियों ने मेवाड की सेना को अपने पैरों तले रौंद डाला, सूंड से उठ उठा कर फेंकते रहे।
- तेज धार वाली तलवारों से सेना पर झपट पड़े।

दृष्य ८.१
१५.००
दो पहर के
बाद

हाथियों के उधम से हताश होकर, महाराणा कुँ. मानसिंह तक पहुंचना चाहते थे।

- मूल योजना के अनुसार महाराणा प्रताप अत्यधिक जोखिम वाले स्थान पर नहीं जाना चाहते थे।
- लेकिन मेवाड़ के सैनिक अपने ही हाथियों के पैरों तले मरते नजर आए।
- मेवाड़ संस्थान की रक्षा के लिए प्रिय एवं वृद्ध सरदारों ने अपने प्राणों की आहुति दे दी, जिससे उनकी विवेकपूर्ण एवं संतुलित मानसिक स्थिति प्रभावित हुई।
- बहुत हताश मानसिकता में, वे साहसी चाल चलकर कुँ. मानसिंह को मारने की तीव्र इच्छा हुई।

दृष्य ११.१
१४.३०
दो पहर

सबसे आज्ञाकारी घोड़े चेतक ने मालिक की इच्छा पूरी की

- शत्रू सैनिकों से बचते हुए चल पडे। एक समय उन्होंने कुछ दूरी पर कुँ. मानसिंह को देखा, "मैं, राणा प्रताप, यहाँ, तुम्हारे सामने हूँ!..." प्रसिद्ध उद्धरण कहा गया।
- हताश मनोदशा में चेतक से जाने-पहचाने मीठे शब्दों से उन्होंने पुचकारना शुरु किया।
- सबसे आज्ञाकारी घोड़े चेतक ने भी मालिक की इच्छा पूरी की। पूरे उत्साह से दौड़ पडा।
- बीच के सैनिकों को खदेडते हुए, उन्होंने भगवान शिव का नाम की रण गर्जना की - "एक लिंगजी की ....जय"।
- कुँ.मानसिंह ने आनन-फानन में अपने महावत को टकराव से बचने को कहा...

दृष्य १०.२
१४.१५
दोपहर

प्रशिक्षित घोड़ा चेतक

❖ एक हताश प्रयास के रूप में, महाराणा प्रताप ने कुँ. मानसिंह का सामना किया।अपने सबसे भरोसेमंद और प्रशिक्षित घोड़े चेतक पर सवार होकर, वे दुश्मन की ओर दौड़े। उनके निजी भील रक्षक भी उनके पीछे-पीछे दौड़ पड़े।

दृष्य १२.१
१४.४५
दोपहर

चेतक ने अपनी प्रसिद्ध मुद्रा लेली...

- चेतक ने अपना प्रसिद्ध पैतरा ले लिया। जोर-जोर से हिनहिनाते हुए सामने के खुरों ने हाथी के कानों पर वार किया। लगा कि उन पैरों के झटके से हाथी का संतुलन खो जाएगा। उतने में स्वार प्रताप को भाला फेंकने का मौका मिलता था।जोर से फेंके गए भाले को देखकर, कुँ. मानसिंह ने हौदे में झुककर अपनी जान बचाई।
- चेतक घोड़े को कान के पास हाथियों पर हमला करने के लिए प्रशिक्षित किया गया था। ताकि हाथी की सूंड से जुड़ी तलवार के घाव से बचा जाए।

दृष्य १२.२
१४.५०
दोपहर

दर्द और पीड़ा असहनीय थी, फिर भी बहादुर चेतक ने संतुलन नहीं खोया...

- लेकिन हुआ यूं कि कुँ. मानसिंह के हाथी ने तलवार के वार से चेतक का पिछला पैर काट दिया।
- दर्द और पीड़ा असहनीय थी, फिर भी बहादुर घोड़े ने अपना संतुलन नहीं खोया।

दृष्य १३.१
१५.००
दोपहर

झाला मानसिंह ने स्थिति को संभाला

सुरक्षा घेरे के मुखिया बने झाला मानसिंह महाराणा प्रताप पर हमले से बचाने के लिए दौड़ पड़े। उन्होंने उन्हें राणा का सुरक्षा कवच पहनने और सुरक्षा के लिए हल्दी घाटी जाने की सलाह दी।

महाराणा प्रताप ने स्थिति समझी। उन्होंने इस घटना के लिए अपनी योजना तैयार कर ली थी। वह चाहते थे कि कुँ. मानसिंह उनके पीछे पीले रंग की (हल्दी) मिट्टी की घाटी में चले आएं।

दृष्य १४.१
१५.१५
दो पहर

एक चातुर्यपूर्ण पीछे हटने की चाल

उन्होंने अपने सैनिकों को 'मरने के बजाय पीछे हटने' का आदेश दिया। वे पीले पहाड़ों में छिपने गए।

दुश्मन सेना द्वारा हल्दी घाटी के जाल में प्रवेश करने के लिए भील तैयार थे।

दृष्य १५.१
१६.००
दोपहर

चेतक की अंतिम छलांग

आज्ञाकारी चेतक लंगड़े स्वामी की सेवा के लिए तैयार था। करीब १० किमी तक दौड़ा। एक जगह २० फुट गहरा सूखा पात्र था। थका हुआ चेतक २५ फीट से अधिक लंबी छलांग लगाने की परीक्षा पास नहीं कर सका और अत्यधिक प्रयास से वह गिर पड़ा।

दृष्य १५.२
१६.००
दोपहर

महाराणा प्रताप ने अपने प्यारे बेटे के समान चेतक को चूमा

- ❖ दोनों घायल हो गए थे। अश्रुपूर्ण आँखों से महाराणा प्रताप ने अपने बच्चों की तरह प्रिय चेतक को चूमा।
- ❖ भारी मन से वे बाकी लड़ाई का नेतृत्व करने के लिए निकल पड़े।

दृष्य
४.३०
दोपहर

रक्त तलाई में स्मारक

दोपहर के ४.३० बजे बादल छाए हुए थे। किसी भी क्षण बारिश की संभावना थी। कुँ. मानसिंह ने सैनिकों को मोलेला छावनी में वापस बुलाया।
युद्ध के मैदान में भारी बारिश हुई। मृत व घायलों के खून का लाल रंग का कुंड बहने लगा।

दृष्य १६.१.१
तारीख़: २० जून १५७६
११.००सुबह

गोगुन्दा किलेपर जाने के तीन संभावित मार्ग।

दो दिन बाद...
मेवाड़ समर्थक बल कुम्भल गढ़ के रास्ते में गायब हो गए। गोगुन्दा किले के ३ संभावित मार्गो के पास छिपे युद्धक बल चले गए।
मुगल सेना
१. हल्दीघाटी दुर्गम इलाके से,
२. दाबुन, संगत के माध्यम से
३. उनवास के माध्यम से
गोगुन्दा की तरफ निकल गए।

दृष्य २०.२ जुलाई का पहला हफ्ता १५७६ ११.००सुबह

संक्षेप में... कौन जीता?

❖ बाद की घटनाओं ने संकेत दिया कि तोप और गोला-बारूद, अन्य सामान, अस्थायी मरम्मत के साथ भी किसी काम के नहीं थे। वे आभूषण के रूप में बने रहे। मजबूत गोगुन्दा किले पर कई महीनों तक हमला हुआ था और वह अजेय था।

❖ मुगल सरदार भोजन की आपूर्ति की कमी से नाखुश थे। वे परेशान था क्योंकि लड़ाई का संचलन ठीक ढंग से नहीं किया गया। भूखे सैनिकों ने अकबर से जाकर शिकायत की। हल्दी घाटी में तोपखाने की क्षति निर्णायक थी। कुँ. मानसिंह पर अगले दो वर्षों के लिए अकबर के दरबार में उपस्थित होने पर प्रतिबंध लगा दिया गया था।

❖ मुगल सेना के कब्जे से बचने के लिए महाराणा प्रताप अरवली के पहाड़ों में भटक रहे थे। भामा शाह और अन्य ने सैन्य अभियान के लिए वित्त और रसद प्रदान की। अगले 12 वर्षों में, उन्होंने उदयपुर और चित्तौड़गढ़ को छोड़कर लगभग सभी किलों पर कब्जा कर लिये। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि युद्धक्षेत्र में विजय का पलड़ा कुँ. मानसिंह ते पक्ष में था। पर महाराणा प्रताप की नैतिक जीत थी।

❖ मेवाड़ राज्य की महिमा के लिए अपने प्राणों की आहुति देने वाले कई मेवाड़ सरदारों के बलिदान के लिए यह लड़ाई हमेशा याद की जाएगी।

कृतज्ञता प्रदर्शन

❖ डॉ पुष्पेंद्र करजाली, लेफ्टिनेंट जनरल देवेंद्र सिंह, ब्रिगेडियर हेमंत महाजन, श्री पांडुरंग बलकवड़े, डॉ मोहन श्रीमाली, के मार्गदर्शन के लिए...

❖ प्रेम डिजिटल स्टूडियो, वीडियो: तस्वीरें, केसरी सिंह, अन्य संदर्भ ग्रंथों से मार्गदर्शन के लिए डॉ ओमेंद्र रत्नू, रमन भारद्वाज के वीडिओ के माध्यम से जानकारी मिलने के लिए ...

❖ महाराना के उदयपुर वासी वंशज महाराना श्रीजी महाराणा से सामग्री प्राप्त होने के लिए, सब का धन्यभागी हूं।

❖ कोई त्रुटियां हो तो अवश्य बता दें।